A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 443 Subject Padya Kavya

Name of MSS Ram Agya

Author

Period Folios 96

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri Alwar, Rajasthan

Missing Folios —

०.७प्र.

॥ इति रामअग्य० सरग सप्तम ॥ ७ ॥ सप्त ... ॥ ७ ॥ ८॥

१ ॥ सदन सोधि पोथी निवति प्रजिप्र मास प्रेम ॥ स
गुन विचारहु चारमति सादर सत्य सनेहँ म ॥ २
मानि गनि दिन गनि धातु गनि दोहा देषी वि
चार ॥ देस काल करता वचन सगुन समय प्र
नहार ॥ २ ॥ सगुन सत्य ससी नयन गुन अव
धि अधिक नवा०न ॥ होइ सुफल जगजा सव
त प्रीति प्रतीति प्रमांन ॥ ३ ॥ गुरु गनेश हरि ०

कीन्ह ॥ आधि विपति सब देव कन समै अस
भक्त ही दीन्ह ॥ ४ ॥ रांम विरह दसरथ दुखित कह
त केकई काकु ॥ कुसमउ जाइ उपाय सब केव
लु कर्म विपाकु ॥ ५ ॥ रु बन रांम सीय वसत
वन विरह विकल पुर लोग ॥ सगुन समुझि क
हु कर्मवस दुख संजोग वियोग ॥ ६ ॥ नृप सीता
ह्रसा कलंकु नीज करसी चत सीय ॥ कपीस
कठ भल सगुन भ न समो कहत कुमीय ॥ ७

नि ॥ तजहु सोकसंकट मिटहि सत्संसग 3
नजियजानि ॥४॥ होनिमीचुदारिददुरिति
आदिकंतगतविच ॥ रामविमुखवंश्यच
नापते गयेनिसाचरनिच ॥५॥ सिलासा
पमोचनचरन सुमिरहुतुलसीदास ॥ त
जहुशोकसंकटमिटहि परजाहिमनकी
आस ॥६॥ इतिसप्तम ऋनापयोगस्सरग
सप्तेत्रलीयोसमसग ॥३॥ सीयस्वयंवर

रा॰ आ॰ सँमयभलसगुनसिद्धिसबकाज ॥ करतग्र
॥४॥ चाग्निविवाहविधिसकलसुमंगलसाज ॥
१ ॥ राजतराजसमाजमहरांमभंजीमवचा
प ॥ सगुनसुहावनलाभवड जयजसविम
लप्रताप ॥ २ ॥ लाभमोहमंगलअवधिसि
यरघुवीरविवाहु ॥ सकलसिद्धिदायकस
मौसुभसबकाजबिहौंउछाह ॥ ३ ॥ कौस
लपालकृपालउरसियमेलीजयमाल ॥
समैसुहावनसगुनभलमुदमंगलसब

काल ॥ ४ ॥ सहरिबिबिबुध बरबहिं सबन
मंगल गान निसान ॥ जयजय रबिकुलक
मल रबि मंगल मोद निधान ॥ ५ ॥ सानानं
दपद्धये जनक दसरथ सहित समाज ॥ आ
ये तिरहुति सगुन सुभ भये सिद्धि सब काज
॥ ६ ॥ दसरथ प्रान प्रेम बिधि उदित समय
संजोग ॥ जनक नगर सर कुमुद गन तुल
सी समुदित लोग ॥ ७ ॥ इति श्रीरामाज्ञायां प्र

6

रा॰ अ -अथ बसंत राग मधे चतुर्थ अष्टक॥४॥मनम॰

५॥ लिनमानीमहिपकोककोकनंदवंद॥सक

लसमाजचकोरसवप्रमुदितपरमानंद॥१

तिहअवसररावननगरअसगुनअसुभ

अपार॥होयहांनिभयमरनदुखसुचक॰

वारहिवारा॥२॥मधुमाधवदसरथजन

कमिलनहरषितरितुराज॥सगुनसुमनउ

रदलसुतरूफूलतफलतसमाज॥३॥वि

नयपरागसप्रेमरससमनसुभगसंवाद।
कुसमितकाजरसाल तरु सगुनसकोकिल
नाद ॥४॥ उदितभानुकुलभानलखिलुके।
उलूकनरेस॥ गएगवांइगहइंपुनिधनुमि
षहरेमहेस॥५॥ चौरिचारुदसरथकुंवर॥
निरषमगनपुरलोग॥ कौशल्लेशाभिषिले
शाहोउसमयसराहनजोग॥६॥ एकविता
तविवाहसवसगुनसुमंगलरूप॥ तुलसी

रा॰ग्र

॥५॥

४

सहितसमाजसुखसुकृतसिंधुहेउभयप॥

१ ॥इतिरामगग्रज्ञायांप्रथमसरगमधोपंच

ममसकुन॥५॥दाईजदयोग्रनेकविधिसुनि

सिहाहिदिशपाल॥सुघसंपतिसंतोषमैसगु

नसुमंगलमाल॥१॥वरदुलहिनिसवपरस्प

रमुदितपाईसवकोम॥चारुच्यारजोरीनि

रषिदुहःसमाजविश्राम॥२॥च्यास्योकुमर

विवाहपुरगवनेदशरथराउ॥भयेमंजुमं

गनेसगुनगुनसुरसंभुपसाउ ॥३॥ पंथपर
सुधरग्यागमनग्यामयसोचसबकाहु ॥ राज
समाजविषादवडभयवसमिटाउछाहु ॥४
रोषकलुषलोचनभ॰ ॥ कुटिपाणिपरसुध
नुवान ॥ कालकरालविलोकमुनिसबस
माजविलषान ॥५॥ प्रभुहिसोपिसारंगमु॰
सी निदीनसुग्यौरवाद ॥ जयमंगलसबकस॰
गुनरांमरांमसंवाद ॥६॥ प्रबधिग्रनंदव॰

रा॰ अ॰ 10 पावनेमंगलगाननिसांन ॥ तुलसीतोर नकलसधुजचवरपताकविन ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

रामअज्ञायांप्रथमसर्गमध्येचयमसर्ग

॥ ८ ॥ साजिसुमंगलआरतीहरखविंवशर निवाश। मुदितमातपरछनचलिउमग तहदयहुलास ॥ १ ॥ करिआरातेनेवछावरि उमगतउमगअनुराग। वरदुलहिनअनु रूपलखिसखिसराहहिभाग ॥ २ ॥ मुदित।

नगरनरनारिसवसगुनसुमंगलमूल ॥ ज
यधुनसुरदुंदुभिवजहिहरषहिवरषहिफूल
३ ॥ आयेकौशलपालपुरकुशलसमाजसमे
त ॥ समौसुलभनसुमिरतसुरवदसकलसि
द्धिशुभदेत ॥ ४ ॥ रूपशीलवयवंशगुनसम
विवाहभयेच्यारि ॥ मुदितराउरानिसकलसो
नुकुलत्रिपुरारि ॥ ५ ॥ विधिहरिहरअनुकूल
अतिदशरथराजहिआजु ॥ देषिसराहहितीसि

रां॰प्र धिसुरसंपतिसमौसमाजु॥५॥सगुनप्रथम
॥८॥ उनचासशुभतुलसीउँनैमौअतिअभिरां
म॥सबप्रसन्नसुरभूमिसुरगुरुगनगंगा
रांम॥७॥इतिरामआज्ञायांप्रथमसरगसंपूर्णं
सप्तक॥७॥अथद्वितियसर्गआरंभते॥दोह
समौरांमजुवराजकरमंगलमुदितनिकेत
सगुनसुहावनसंपदासिद्धिसुमंगलहेत॥
१॥सुरमायावसकैकयीसुसमयकीन्हकु

चालि॥ कुटिल नारि मिस होय छल अनभल ग्राजु कि काल॥ २॥ कुसगुन कुसमौ को हि सम ॥ रामसमयवनवास॥ अनुरप अनभल अवध जगजानत सर्वसुनाश॥ ३॥ सोचत पुरपरिजन सकल। विकलराय रनवास॥ छल मलीन मनतीय मिस बविपति विषाद विनास॥ ४॥ रंमरंमल रवनासि यवन गमन सकल अमंगल मल॥ सोच पोच संताप व

14

रां॰प्र॰ सकुशमसंशयसकल॥५॥प्रथमवाससुर

॥९॥ सरिनिकटसेवाकीन्हनिषाद॥कहतप्रभु

भाशुभसगुनफलविसमयहरषविषाद

६॥चलेनहायप्रयागप्रभुसीयलषनरघु

राज॥तुलसीजानवसगुनफलहोयहि

साधुसमाज॥७॥इतिरामाज्ञायांतुली

यसरगमप्रथमसप्तक॥ १॥सीयराम

कोनेलषनतापससेषवनूप॥तपतीर

य जपजागहितसगुनसमंगलरूप॥ १॥ सी
तालषनसमेतप्रभुजनमनाउनरनाह॥ च
लेसकलसंकटसमनसगुनसुमंगलपाय॥ २
अवधसोकसंतापवसविकलसकलनरना
रि॥ कौमविधातारंमविनुमागतमिचपुका
रि॥ ३॥ लषनसियरघुवंसमनिपथिकपाय
उरआन॥ चलहुअगममगसुगमसुभसुग
नसुमंगलजांन॥ ४॥ ग्रामनारिनरमुदितम

रां॰ग्य॰ 16

॥२०॥

नलघनरांमसियदेषि॥ होयप्रीतपहचान४
विनुचलतविदेशविशेषि॥ वनमुनिगनरां
महिमिलहिमादितसुकृतफलपाइ॥ शगुन
सिद्धिसाधककदरसअभिमतहोयअघाइ॥५
चित्रकूटपयतीरप्रभुवसेतहोंकुलभानु॥तु
लसीतपजपजोगजगसगुनसुमंगलजांन
७॥ इतिरांमअज्ञायांतृतियसरगमेंतृती
यसप्तक॥३॥ हंसवंसअवतंसजवलीन्हवा

सपथपास॥ तापससापकसिद्धमुनिसब॰
कहुसगुनसुभास॥१॥ विटपवेलिफूलहिं
फलहिजलथलविमलविशेष॥ मुदितकि
रातविहंगमृगमंगलमूरतिदेषि॥२॥ सींचें
हीसीयसरोजकरवएविटपवरवेलि॥ स
मौसुकालकिसांनहितसगुनसुमंगल॰
केलि॥३॥ हयहांकेफिरदक्षिनदिशिहेरिहे
रिहिहनात॥ भयेनिषादविषादवसचलेव

रा॰ अ॰ 18

॥२२॥

धिसुमंतहि ताता॥४॥ सचव सोच व्याकुलसु
नत असुन अवध प्रवेश॥ समाचार सुनिसै
चवसमा गीमीचु नरेश॥५॥ रामरामकहि
रामसीयरामसरन भयेराउ॥ सुमिरहु सीता
रामअवनाहिनिगोनि उपाउ॥६॥ रामविर
हदसरथमरनसुनिमनअगमसुमिचु॥ तु
लसीमंगलमरननतरु सुचिसनेहजलसीव
७॥ इतिरामअज्ञायोहतियसरगस ७ ॥

19

॥ श्रीरसप्तक ॥ ३ ॥ दोहा ॥ धीरवीररघुवीरसी
य सुमिरसमिर कुमार ॥ मगमसुगमसबका
ज कर करतलसिद्धिविचार ॥ २ ॥ सुमिरिश
त्रुसूदनकैं चरनमगनसुमंगलमानि ॥ प
रपुरवादविवादजय जैऊं जवाजियजानि
२ ॥ सेवकसषासुवंधुहितसगुनविचारिवि
शेषि ॥ भरतनांमगुनविमलगुनसुमिरिस
रसबलेषि ॥ ३ ॥ साहिवसमरघमालजि

20

रा०म० रिसिसेवकसुलभसमांन ॥ रांमसुमिरसीयसु
१२॥ भसगुनकारहुमहाकल्यांन ॥ ४ ॥ कहतसुक
तसोभाग्यधिकसीयसुमंगलमांनि ॥ सुमि
रिसगुनजियधर्महितकहतसुमंगलजा
नि ॥ पू ॥ लखनलखितमारतिहृदयंगांनि
धरैधनुबांन ॥ करवैहुकाजसवसगुनसु
भमुदमंगलकल्यांन ॥ ६ ॥ रांमनांमपरतीं
मतैप्रीतिप्रतीतभरोस ॥ सोतुलसीसुमि॰

रतिसकलसिधिसुमंगलकोस॥७॥इतिश्री
रामाज्ञायांतृतीयसरगमध्येचतुरथोसप्त
क॥४॥गुरुआयसआयेभरतनिरखिनगरन
रनारि॥सानुजसोचतपोचविधिलोचनमोच
तवारि॥१॥भूपमरनप्रभुवनगवनसबविधि
अवधिअनाथ॥सोचतसमुझिकुमारहँत न
मीजीहाथधुनिमाथ॥२॥वेदविहितपितु
कर्मकरिलियेसंगसबलोग॥चलेचित्रकु

22

रा०अ० टहिं भरत व्याकुल राम वियोग ॥३॥ रांमदरस
२३॥ हिये हरष बड भूपति मरन विषाद ॥ सोचत
ग्रम रस माज सुनि रांम भरत संवाद ॥४॥ सु
नि सिषि ग्या सिष पावरी पाई नाई पद माथ
चले ग्रवधि संताप वस विकल लोग सब सा
थ ॥५॥ भरत नेम व्रत धर्म श्रम रांम चरन
अनुरांग ॥ सगुन समुझ साहस पकरि सिधि
होइ जप जोग ॥६॥ चित्रकूट सव दिन वस

23

नप्रभुसियलखनसमेत ॥ रं मनोमजपजो
गकरितुलसीग्रभमतदेत ॥ ७ ॥ इतिश्रीरं
मग्रज्ञायांद्वतियसरगमध्येपंचमसप्तके
॥ ५ ॥ दोहा ॥ भए सुहावनभूमिवनसैलसु
पावनपिठि ॥ रं जिहिमीठिविसेषिछिति ॥
विषयविरागहिमीठ ॥ १ ॥ फटकुसिलामं
दाकिनीसीयरघुवीरविहार ॥ रं मभक्ति
हितसगुनसुभमतलमत्तमंडार ॥ २ ॥ स

24

रा॰अ॰ गुनसकलसंकटहरना।चित्रकूटचितचा

२७॥ रु॥सीतारामप्रसादसभ मलहुसाधनवडल

हु॥३॥दिएअवचरूषिजानकीहिवसनवि

भूषनभूरि॥रामलषपासंतोषसुषहोयस

कलदुरवदूरवदूरि॥४॥काकुत्कुचालिविरा

धवधेदेहतजिसरभंग॥हांनमरनसव

कसगहनअनरथअश्रुमप्रसंग॥५॥राम

लषनमुनिगनमिलनमंगलमंजुलम

लो॥ सबसमाजलवहोयजनवरों मरमाक्रम॰
नकूलो॥८॥मिलेकुंभसंभवमुनिहिलष
नसियारघुराज॥ तुलसीसाधुसमाजसु
खसिद्धिदरससबकाज॥७॥इतिश्रीरां
मग्रज्ञायांद्वतीसरगमधेषषकसप्त॰
को॥६॥सुनिमुनिआइसप्रभुकियौ पंच
वटिवनवास भईमहिपावनपरसिपद
भासबभांतिसुपास १ सरितसरोवरसज

26 ६१॥

सं० २५ २५॥

लसदंजन जविपुलवहगा सम उसुहावन सगुन सुभ

राजा भजा प्रसंग त्रा विट वेलि फूलहि फलहि सीतल

सहसरीर सुहित विहंगमग मधुपगन वनपल्लव

दोउ वीरा आमोद करगोदावरी विपन सुसहसवक्ता

लागे निरंजन मुनि ... करहि पालकराम अपाला॥७॥

कोटगीवरघुराजसनदु हुं दिस हू देखा सामग्री पापस

माहीवहिमाहिवपापसमृधास॥॥ पकहिपछावरि मुनितन

 27

पुराण आगम निगम पुरान ॥ सगुन समृ बिद्या लाष हित जा

न वसम पुसमान ॥१५॥ बिज कासीन्वत जानकी तूल

मीरापुरसाल ॥ अनुविधि निपुणे न नाम नलवा॥

प्राकरवीमृकाल ॥ ७ ॥ यो विदुन प्रमगम सेपूर्णी

मुदित विहंग मृग मधुप गन वन पालक देउ वीर

28
रां॰ प्र॰ ॥ अथ रामअज्ञा तृतीय सर्ग प्रारंभते ॥ सु
॥२५॥ नि मुनि आयसु प्रभु कहौ पंचवटी वर वा
स ॥ भइ महि पावन परसि पद सब भांति सुवा
स ॥१॥ सरित सरोवर सरस जल विज फूल व
हुरंग ॥ समौ सुहावन सगुन सुभ राजा प्र
जा म संग ॥२॥ विटप बेलि फूलहि फरहि
सीतल वहै समीर ॥३॥ मोद करि कोदाव
रि वन सुगंध सब काल ॥ निर्भय मुनि ज

पतपवरहिपालकरांमकृपाल॥४॥भेटगी
धरघुराजसनदुहुंदिसिहृदयहुलास॥सेव
कपाइसाहिवहिसाहिवपाइसुदास॥५
पठहिपठावहिमुनितनयआगमनिगमपु
रान॥सगुनसुविद्यालाभहितजानवसम
यसमान॥६॥नीजकरसीचतजानकीतु
लसीलाइरसाल॥सुभद्रुमतीयाउंचासफल
वरषाकृषिसुकाल॥७॥इतिरामाज्ञायां

रा॰ प्र॰

॥२७॥

30

तृतीयसरगमध्येप्रथमसप्तक॥ १॥ दो॰

दंडकवनपावनकरनपरमचरनसरोजप्र

भाउ॥ उषरजामहीखलतरहिहोहिरंकतेराउ॥ १॥ कपटरूपमनमलिनगईसूपनखा

प्रभुपास॥ कुसगुनकठिनकुमारकृतक

नाककानबिनुबि

नहकलुषउपहास॥ २॥

कालभईबिकटकरालकरूप॥ कुसगुनपा

ईनदेवमगपगपदकेटकरूप॥ ३॥ घरदुख

नरेद्रिदुषित चठे साज सब साज ॥ अनरथ
अवगुन अघ अरु असुभ अन भल अखिल अका
ज ॥४॥ कटक टोय कुरटार टहि फिकरहि के
हु कुभाति ॥ नीच नीसाचर मोह बस अोन
मोहमद मांति ॥५॥ रांम रोष पावक सब वन ॥
निश्चर सलभ सम मान ॥ उरत लपरत जरि ज
रिमरत भये भस्म जग जांन ॥६॥ सीताल
बन समेत प्रभु सोह तत तुलसीदास ॥ हरषत

32

रा॰ अ सुरवरषतसुमनसगुनसुमंगलपासा॥१॥
॥२८॥ ॥इतिरामआज्ञायांत्रतीयसरगमध्येद्वतीयसप्तक॥२॥ सुभटसहस्रचोदहसहितभये
कालवसिजांनी॥स्वपनबालकेहीचलीअ
शुभअमंगलखानि॥२॥ वसनसकलभौ
णितसमलविकटवदनगतमात॥रोवत
रावनकोसभातातभ्रातहाभ्रात॥२॥का
लकीमूरतिकालिकाकिलकारतविकरा

त॥ बिनु पहचानैं लंकपति सभा सहित
ता काल ॥३॥ सूपनखा सब भांति गत प्रसु
भ ग्र मंगल मूल ॥ सबहि साठ साती सरिस
न पहि मजहि प्रतिकूल ॥४॥ बर बासि गवन
रो बनहि ॥ अस्गुन भये अपार ॥ नीच गन न
तनही मीचु बस मिलि मारीच बिचारि ॥५॥
इतरो बन उतरो मन के मीचु जानि मारीच
कपट कनक मृग बेष तब कीन्ह निसाच

रा॰ अ॰ ॥२९॥

34

रनीच॥५॥ पंचवटीवटविटपतरसीताल
षनसमेत॥ सोहततुलसीदासप्रभुसकल॰
सुमंगलदेत॥८॥ इतिरा॰ त्रतीयसर्गसप्तमो
त्रतीयोसप्तक॥३॥ मायाम्रगपहिचांनिप्र
भुचलेसीयरहविजांनि॥ वंचकचोरप्रपंचके
लसगुनकहतहितहांनि॥१॥ सीयाहरन॰
औगुनभयेनरसंसयसंताप॥ नारकाज
हितविपटगतप्रगटपराभवपाप॥२॥ गी

धराजरावनसमरघाइलवीरविराज॥सरसु
जससंग्राममहिमरनसुसाहिवकाज॥३॥
रामलषनवनवनविकलफिरतसियासुधि
लेत॥सोचतसगुनविषादवडअसमअरि॰
छ॰अचेत॥४॥रघुवराविकलविहंगलषिसो
विलोकिदेउवीर॥सियसुधिकहिसियरांम
कहितजिदेहमतिधीर॥५॥दसा॰रघपतैदस॰
गुनभगतिसहिततासुकरकाज॥सोचतवं

रां॰अ॰ धुसमेतप्रभुक्रपासिंधुरघुराज॥५॥ तुलसी
सहितसनेहनवसुमिरुसीतारांम॥ सगुन
२०॥ सुमंगलसुभसदनआदिमध्यपरिनाम॥७
॥इतिरांमअ॰त्रतीयस॰३सप्तक॥४॥
सकलकाजसुभसमयभलसगुनसुमंगल
जांनि॥ कीरतिविजयविभूतिभलहियहुल
सांनहिजानि॥१॥ सुमरिशत्रुसूदनचरनच
लहकरहसुवकाज॥ शत्रुपराजयनिजविज

यसगुनसुमंगलसाज ॥ २ ॥ भरतनामसुमरत
मिटैकपटकलिसकुचालि ॥ नीतिप्रीतिपर
तीतहितसगुनसुमंगलसालि ॥ ३ ॥ रामना
मकलिकलपतरुसकलसुमंगलकंद ॥ सुमिर
तकरतलसिधिसवपगपगपरमानंद ॥ ४ ॥ सी
ताचरनप्रणामकरिसुमिरसुनामसनेहैं म
सुतियहोहिपतिदेवताप्राणनाथप्रियप्रेम ५
लषनलालितमरातिम धुरसुमिरहुसहित

रा॰ प्र॰ ॥२२॥

38

सनेह॥ सुखसमेतवीरति विजयसगुन सुमंगलगेह॥८॥ तुलसी तुलसी मंजरी मंजुल मंगलमूल॥ देषत सुमिरत सगुन सुभ कलपलता फलफूल॥७॥ इति तृ॰ सर्ग॰ तृतीयस॰ पंचमसप्तक॥५॥ घलवल गंधक वंधव॰ सपरे सुवंधसमेत॥ सगुन सोच संकटस हित भजनमेतउषदेत॥१॥ पाईमीचु सनीचमल मिटा महामुनि शाप॥ विहंगमरन

सीयसोचमनसगुनसमयसंताप॥२॥कह
सवरीसवसीयसुधिप्रभुप्रभुसराहिफलषात
सोकसमयसंतोषसुनिसगुनसमंगलबा
त॥३॥पवनसवनसुभेटभईकपिसुतासु
धिपाई॥सोचविमोचनसगुनसुभमिलेसो
ससेवकआई॥४॥रामलषनहनुमानकेउ
रहितिपरमउछाहु॥मिलेसुसाहिबसेवकहि
प्रभुहिसुसेवकलाह॥५॥कीन्हसखासुग्री

सं०अ० ॥२२॥

40

बंधुबधू तिन्ह बाहू रघुवीर ॥ सुभ सनेहहितनस
गुन सुभ मोटे सोच भयभीर ॥ ५ ॥ कालि बलि
बल सालन्ह हति सखा कीन्ह कपिराज ॥ तुल
सी राम कृपाल को बिरद गरिब निवाज ॥ ७ ॥

॥ इति सं० तृतीय उमसप्तक समाप्त ॥ ५

बंधु बिरोध न कुसल कुल कुमनुन को दिन
कालि ॥ रावन रिपु कौ राहु सो भयो काल बस
बालि ॥ १ ॥ कीन्ह बास बर बानि रषि मोर बर

सानुजरांम॥ काजविलंबु वितसगुन फलहोइ
हि भलसव कोंम॥२॥ सीयसोध कपिभालुस
वसिसुग्रीवकसव कोंम विदाकियेकपिनाथ
जतनकरहु आलसतजहुनाई रांमपदमाथ
३॥ हनुमानहियहरषतनरोंम जहारेजाई॥
मंगलमूरति मारुतहीसा दरलीन्हबुलाई॥४
फिरेजवानरभालुसव ग्रवधिगए विनुकाज
जोन्माइहिसोकालवसकोपिकहाकपिराज॥ ५

रा०म०

२३

42

ज्ञानसिरोमनिजानिजियकपिबलबुद्धिनि॰
धांन॥दीन्हमुद्रिकामुदितमन पाईमुदितहनु
मांन॥५॥तुलसीकरतलसिद्धिसबसगुन
सुमंगलसाज॥करिप्रणामरामहिचलेसहज
सिधिसुरकाज॥७॥इतिरामाग्य०तृतीयसर
र्गस्यप्रथमं॥सप्त॥१॥दोहा॥अथरामाग्य०च
तुर्थसर्गप्रारंभते॥दोहा॥नाथहाथमाथे
धर्यौप्रभुमुद्रीमुखमेलि॥चलेसुमिरि॰

सारंगधरग्यानैसिधिसकेलि॥१॥ संगनील
नलकुमुदगनजामवंतजुवराज॥ चलेराम
पदनाइसिरसगुनसमंगलसाज॥२॥ पंथवि
वरमिलितापसिन्हिअचपेनिफलखाई॥ स
गुनसिधिसाधकदरसअभिमतहोइअधा
इ॥३॥ वनचरविकलविषादवसदेषोउद॰
धिअगाह॥ ग्यसमंजसवडसगुनगतविधि
वसहोइनिवाह॥४॥ सवसभीतसंपतिल॰

रा॰ प्र॰ 44 श्रीहरहरेहृदयनरास॥ कहतपरसपरगीधग

२८ तिपरिहरिजीवनआस॥४॥ नवतननपंखरिखा

इप्रभुमहिमाकथासुभाइ॥ धरेधीरसाहससम्र

रोमुदितसीयसुधिपाइ॥५॥ तुलसीरामप्रभा

वकहिमुदितचलेसंपाति॥ सुमतीसरउद्धा

सफलसगुनसुमंगलजाति॥७॥ इतिरा॰प्र॰

चतुर्थसर्गस॰प्रथमसप्तक॥१॥ रामजन्म

सुभसगुनमंगलसकलसुकृतसुधसारु॥ पु

त्कालुकल्यांनवडमंगलचारुविचारु॥२॥
दसरथकुलगुरु श्रीकृपासुतहितजज्ञकरा
इ॥ पायसपाइविभागपकरिरांनिन्हदीनवु
झाइ॥२॥ सवसगर्भसोहेसदनसकलसुमं
गलखांनि॥ तेजप्रतापप्रसन्नतारूपनजा
ईवखानि॥३॥ देखिसुहावनसयनसुभस
गुनसमंगलपाई॥ कहहिंभूपसनमुदितम
नहरषनहृदयसमाई॥४॥ सपनसगुनसु

रा॰ग्य॰ निराई कहि कुलगुरु गासिर्वाद ॥ फ जिहि सब
२५॥ मन कामना संकर गौरि प्रसाद ॥५॥ मास पाष
नित्य जोग सुभ नषत लगन गृह वार ॥ सव
~~लसुमंमल मगल नपरंमली~~ ॥ सकल सुमं॰
गल मूल जग राम कीन्ह सब नार ॥६॥ भरत
लषन रिपुदवन सव सुवन सु मंगल मूल ॥
प्रगट भये नृप सुकृत फल तुलसी विधि अ
नुकुल ॥७॥ इति रामग्य॰ च॰ तृतिय स॰

सवा॥ या॥ घर २ अवबधवधावने मुदितनग
रनरनारि॥ वरषिसुमनहरषहिविबुधवि
धित्रिपुरारिमुरारि॥ २॥ मंगलगाननिसान
सुभअवछरितयहैविचारि॥ भूपसकलतत
नसुरनरपिफलेचारूफलेचारूफलचारि
२॥ पुत्रकाजकल्याननपरघेदानवहुमं
ति॥ रहसविवसरनिवासमवमुदमंगलं
दिनरोति॥ ३॥ घरनदिनअवधविवधावेनिं

48

रा० म० तनवमंगलमोद॥ मुदितमातुपितुलोगल
२५॥ खिरघुवरवालविनोद॥४॥ करनवेधचूडा
करनलौकिकवैदकरिकाज॥ गुरआयस
भूपतिसुकृतमंगलसाजसमाज॥५॥ राज
अजीरराजतरुचिरकौशलपालकृपाल॥
जोउपंनीचरचाचरितसगुनसुमंगलमा
ल॥६॥ लीन्हमातुपितुभागवससुतज
गजालधिलकाल॥ छत्रलाकुहितसगुन

सुभतुल्लसिसुमिरहुरांम ॥७॥ इतिरांगआ

व॰स॰ चलीयमतक ॥३॥ बालविभूष

णवसनवारधूसधूसरअंग ॥ बालकेलि

रघुवीरकृतवालवंधुसव॰संग ॥२॥ रांम

भरतलछमनललितसत्रुसुवनसुभना

म ॥ सुमिरतिदसरथसुवनसवपूजिहिं

सवमनकांम ॥२॥ नौमललितलीलाललि

तरूपललितरघुनाथ ॥ ललितवसनभू

रा॰ म॰ 50 घनलसततुलितललितअनुजसिसुसाथ॥३

२७ सुदिनसोधिमंगलकीवेदीयेभूपकृतवंध

अवधिवधावाविलोकिसुखवरषतसुवनसु

गंध॥४॥भूपतिभूसुरभाटनटजाचकपु

रनरनारि॥दीएदानसनमानिसवपूजेकु

लअनुहारि॥५॥सरवसवासिनिविमतपस

नमानेसवराय॥६॥समनायअसीससुभदी

न्हसनेहसुभाय॥७॥रामकाजकल्यानसुभ

51

सगुनसुमंगलमूल॥चिरजिवहुतुलसीसवै
सुरकहिवरषहिफूल॥७ ॥इतिरामाग्याप्रस
रगचतुर्थ॥४॥सपक॥४९॥रामजनमसु
भकाजसवकहतदेवरिषिराइ॥सुनरभि
यहनुमानकेप्रेमउमगनसमाइ॥१॥भरत
स्पांमतनरोममममसवगुनरूपनिधांन॥
सेवकसुषदायकसुलभसुमिरतसवकल्या
न॥२॥ललितलालकोनेलषनजांनहुलहु

रां॰ग्र॰ निहारि ॥ सुभगसगुनसबहोहिंहितन्हेहुलसि
२८ ॥ तफचारि ॥ ३ ॥ मंगलमूरतिमोदनिधिमधुर
मनोहरवेष ॥ रामअनुजहपुत्रफलहोहिंहि
सगुनविसेष ॥ ४ ॥ कोधतमहिमयजनकउरसी
यसुमंगलखांनि ॥ भूपतिपुन्यपयोधिजोरमा
अगटभईअंगांनि ॥ ५ ॥ नांमसचुसदनसुभगसु
षमासीलनिकेत ॥ सेवनसुमिरतसुलभसु
षसकलसुमंगलहेत ॥ ६ ॥ कालककौसल

पालकैहैसबपालकपाल॥५॥तुलसीमनमा
नसबसतमंगलमंजुमराल॥७॥इतिराम
ग्र०सरगचत्रमसक॥५॥जनकनंद
नीजनकपुरजबतेप्रगटीआय॥नबतेसब
सुषसंपदाअधिककरअधिकाय॥१॥सीयस्वयं
बरजनकपुरसुनिरसकलनरेस॥आएसा
जसमाजसजिभूषनबसनसुदेस॥२॥चलै
मुदितकौसिककअवधिसगुनसुमंगलसाध

रा॰ प्र॰
२८॥

54

आये मुनि सन गहे आने कौशलनाथ ॥३॥ सा
दर सोरह भाति तिन्ह पुजि यह नुइ कीन्ह ॥ विन
य वड इ देषि भनि गृ भिमत्त आसिष दीन्ह ॥४॥
मुनि मागे दशरथ दयौ राम लषन दोउ भाए
पाइ सगुन मल सुकृत फल प्रमुदित चले लि
वाए ॥५॥ स्यांमल गौर किसोर वर धरै तूण
धनुवांन ॥ सोहत कौसिक सहित मग मु
द मंगल कल्यांन ॥६॥ शैल शै [redacted]

रि

रीत सर बाग वन मग विहंग बहुरंग ॥ तुलसी
मंगल जात प्रभु मुदित गाधि सुत संग ॥७॥
॥ इति श्री राम० सरग चतुर्थ ४ सप्तक ॥
लैत विलोचन लाहु सुभ० बड भागी मग
लोग ॥ रांम रूप दरसन सुगम प्राम जग त
जप जोग ॥१॥ जलद छांह मृद अवनि मग ॥
सुषद पवन अनुकूल ॥ हरषत विबुध वि
लोक प्रभु वरषत सुर तर फूल ॥२॥ दले म०

रां॰ अ॰ 56

३०॥ ज्ञानघनरूपरामविमलसुनि सिय आसीदीनः ॥ वि
द्याविस्वामित्रमुमनसुपलसमर्पनकीनः ॥ ३
अभयकीयेमुनिराविमप धरैकनकधनुमा
प ॥ धनमपकौतुकजनकपरचलैगाथिसु
तसाप ॥ ४ ॥ गौतमतीयतारनकवलअंबु
जपदअवरेषि ॥ सकलसुमंगलसगुनसुम
करतलसिद्धविसेषि ॥ ५ ॥ जनकपाईप्रीयपा
हुनेपुजेपरमसंजोग ॥ बालककौसलपालके

57

दबिमगनगुरकोग॥५॥सनमानेआनेभवन
पुजेमतिन्रानगग॥तुलसीमंगलमगुन
सुमझरिभलाईभाग॥ ॥इतिश्रीरामग्य
ज्ञाचतुर्थसरग॥सगुन॥ ॥दोहा॥अथ
पंचमसरगप्रारंभने॥कौशकदेषनधन
षचलेसंगदोउभाई॥कुवरनिरषनरनारिपु
रषदितनपनफलपाई॥२॥झपसमाभव
चापदलिराजनराजकिसोर॥सिधिसुमंग

58

रा॰ म॰ लसगुनसभजैजैजैसव औरा ॥ २ ॥ जैजैमंग

३२ ॥ लमालउरमंगलम्मरति देषि ॥ गान निसान

असनउरिमंगलनादविसेषि ॥ ३ ॥ समाचा

रसुनिअवधिपतिआयेसहितसमाज ॥ प्रीती

परसपरमिलतमदसगुनसुमंगलसाज ॥ ४

गाननिसानवितानवरविरचेविविधिवि

धांन ॥ चारुविवाहउछाहअतिकुसलका

जकल्यांन ॥ ५ ॥ दायजपाइअनेकविधिसु

नसुतवधुसमेत ॥ अवधिनाथ आयेअव
धिसकलसुमंगलखेत ॥ ६ ॥ सोपचारउचा
ससुभघरमंगलचार ॥ तुलसिहिसबदिनदा
हिनेदसरथराजकुमार ॥ ७ ॥ इतिश्रीरामअ
ज्ञापंचमसरग ५ सप्तकप्रथम ॥ १ ॥ रांम
नामकलिकांमतरुरांमधैनुं भक्तिसुरधेनु
सगुनसुमंगलमूलजगगुरुपदपंकजरेनु
॥ १ ॥ जलधिपरमांनसअगमरांवनपालित

रा॰ म॰ लंक॥सोचविकलकपिभालुसवचहुदिसिसंक
३२ टवंक॥२॥जामवंतहनुमंतमिलिकहाविचा
रिविचारि॥रामसुमरिसाहसकरियमानीय
हायेनहारि॥३॥रामकाजलगिजनमजगसु
निहरषेहनुमंत॥होइपुत्रफलजनमगुनसुमरे
मभगतवलवान॥४॥कहतउछाहवढाइज
पिसाषिसकलप्रवोध॥लागतरामप्रसादसम
हिगोपदसरिसपयोधि॥५॥रामतोषसवसा

पसमसगुनसुमंगलपाई॥ कूटकुधरचढगों
निठुरसीयसहितदोउभाई॥६॥हरषिसुमन
वरषहिविबुधसगुनसुमंगलहोत॥ तुलसी
कपिलंकाचौजलधिमभसतापकरिपोत॥७
॥इतिश्रीरामआज्ञापंचमसरगपमध्ये
दलीयसप्तक॥२॥राहुमातमायामलिन
मारीमारुतपत॥ समयसगुनमारगमिलहि
छलमलिनखलघत॥२॥ फजपायमयना

रा॰ म॰ कपयसुरसाकपिसंवाद मारगअगमसहाय
३३ सुभभयोरामपरसाद २ लंकाबोलतलोकिनी
कालीकालकराल कालकरालहिहीन्हवलि
रूप कालरूपकलिकाल ३ मसकँदेसकेघरहि
निसिकपिघररदेषि सियहिविलोकअसो
कतरहरषविषादविसेषि ४ फरकतमंग
लअंगसीयवामविलोचनवाहु त्रिजटा
सुनकहसगुनफलप्रेयेसंदेसवडलाहु ५

सगुनसमुझित्रिजटाकहितसनसीतेउरआज
मिलहिरामसेवककहैकुसलल्षनरघुराज
५॥ तुलसीप्रभगुनगनवरनिंअपनीवातज
नाई॥ कुसलषेमसुग्रीवपररामलषनदोउ॰
भाई॥ ७॥ इति ॰ पंचमस ॰ तृतीयसप्तक॥
३॥ सहषजोंनकीजंनिकपिकहेसकलसंके
त॥ दीन्हमुद्रिकालीन्हसीयप्रीतिप्रतीतिसमे
त॥ १॥ पाईनाथकरमुद्रिकासीयहीयहरषवि

रा॰ म॰ ३४ ॥

64

बाद ॥ प्राणनाथ प्रायसेवक हिदीन्ह सुग्रासीर
बाद ॥ २ ॥ नाथ सपथ पनरोपी कपि कह तचर
नसारू नाय ॥ नहि विलंब नजगदेवि ग्रवग्रा
वेद षिदो उभाई ॥ ३ ॥ समाचार कह सुनन तग्रभ
मानजसहितसहाई ॥ ग्राए ग्रवरघुवंसमनि
सोचपरहरिएमाय ॥ ४ ॥ गयसोचसंकटसक
लभयेमुदितजियजान ॥ कौतुकसागरसे
तुकरिग्राएकृपानिधान ॥ ५ ॥ सकलसहल॰

65

जमराजपुरचलनचहतदसकंध॥ कालन
देषतकालवसजीसविलोचनजेध॥ ९॥ मा
सिवद्यायउपाइकपिसियचरनसिरनाइ
तुलसीरावनबागफलषातवऽनायवना
ई॥ १०॥ इतिरांम० सरगपंचमपंसमसकच
नु० ५॥ स्नरासिरोमनिसाहसीसुमतिसमीर
कुमार॥ समिरतसषसवसंपदासुभमंगल
दातार॥ १॥ शत्रुदमनपदपेकरहसमरकरहु॰

66

रा॰ ग्र॰ सबकाज ॥ कुसल हेम कल्यान सभ सगुन स
मंगलसाज ॥ २ ॥ भरत भलाइ की अवधि सील
॥ ३५ ॥ सनेह निधान ॥ धर्म भगत भाय पसमै सगुन
कहत कल्यान ॥ ३ ॥ सेवक पाल कृपाल चित
रविकुल कैरव चंद ॥ समीरी काहु सब का
ज सुभ पग पग परमा नंद ॥ ४ ॥ सीय पद सभि
री सता यहित सगुन सुमंगल जोन ॥ स्वामि
सुहागिनि भाग बड़ उत्छाज कल्यांन ॥ ५

लछिमनपदपंकजसुमरिसगुनसुमंगलपाई
जैविभूतिमंगलकुसलअभिमतठाकुअघा
ई॥ ध॥ तुलसीकोंननकमलवनसकलसमंग
लवास॥ रांमभगतहितसगुनसुभसुमिरत
तुलसीदास॥ ७॥ इतिरांमअ० पंचमसर्ग ५॥
सप्तक॥ ५॥ रेषनिपाततरवातफलरहुकं
अहुमिपात॥ कालरूपविकरालकपिसभय
निसाचरजोति॥ १॥ वनउजारिजारेउनगरकू

 द्विउपिरक पिनाप्य॥ हाहाकार भुकारस वग्रा
॥३५॥ रतमारतमाय॥२॥ प्रभुवुझायप्रवो यसियग्माय
गयेप्रभुपाई॥ षेमकुसल जैजांनकीजे३ रघु
राई॥३॥ सुनिप्रमुदितरघु वंसमनिसानुजसे
नसमेत॥ चलेसकल मंगलसगुनविजयषि
च्चिकहदेत॥४॥ रांमपयानानिसांननभवाजहि
गाजहोवीर॥ सगुनसुमंगलसमरिजयकोर
तिकुसलसरीर॥ ५॥ रूपासिंधुप्रभुसिंधुसुनि

69

मा॰गोपं घनदेत ॥ विनयन माननजीवजडडा ठे

चेतअचेत ॥ ५ ॥ लाभमालुक्को भाकहै छेमकरि

कहेछेम ॥ चलतविमिवनसग्गुनसुनितुलसी

पुलकतप्रेम ॥ ७ ॥ इतिश्रीराम॰पंचमसर्ग

समाप्त ॥ ६ ॥ पाहिपाहिअसरनसरनप्रणतं

पालरघुराज ॥ दीयोतिलकलंकेसकहिरामग

रीवनवाज ॥ २ ॥ लंकअसुभचरचाचलतघाट

वाटघरघाट ॥ रांवनसहितसमाजअवजाइं

हिवारहिवार ॥२॥ उलकपातदिग्दाहहिदिनापि
करहिस्वानसियार ॥ उदितकेतगतहेतमहि
कंपतवारहिवार ॥३॥ रोमकूपाकंपिभालुकरि
कौतुकसागरसेतु ॥ चलेपारवरघनविबुधसु
मनसुमंगलहेत ॥४॥ नीचनिसाचरमीचुवः
सचलेसाजिचतुरंग ॥ प्रभप्रतापपावकप्रव
लउडिउडिपरतपतंग ॥५॥ साजिरवाहनचले
जातुधानवलवान ॥ असगुनअमितन

71

गनहीसवकालआयनियरांन॥६॥नरतभा
लुकपिभटसवानिडरनिसाचरघोर॥सिरपर
समरघरांमसेसाहिवतुलसीतोर॥७॥इति
सरग५समक॥१॥मेघनादअतिकायभट
परेमहोदरखेत॥रांवनभाइजगायतवकहम
संगअचेत॥१॥उठिविसालविकरालकैभट
कुंभकरनजभांन॥वेषसुलखिकपिभालु
दलजोंमैकालसमुहांन॥२॥रांमस्यांमसवारी

72

रा॰ प्र॰ ॥३८॥

थसघनसापसुनतकपिभालु। हरषनसुर
वरषतसुमनदल्यौदैयाल्है काल ॥३॥ रांम
रांवनहिपरसपरहोतीरारिरिरलघोर॥ लरसि
प्रचारिप्रचारभटसमरस्फरचहूंग्रोर॥४॥ बीस
बाहुदससीसहतिषंड२तनकीन॥ सुभटसि
रोमनिलंककपतिपाऊैपाउनदीन॥५॥ बेतुध
वजावतदुंदभीहरषतवरषतफूल॥ रांमविरा
जतजीतिरनसुरसेवतअनुकूल॥६॥ लंका

थापिबिभिषनहि बिबुधबसाइसुबास॥ तुलसी
जयमंगलकुसलसुभपहिमउंनषास॥७॥
इतिश्रीरामज्ञा० सर्ग५॥ सप्तकप्रथम॥
॥१॥ रघुपतिआयसुअमरपतिअमींयसींचि
कपिभालु॥ सकलजिवायेसगुनसुभसुमर
हिंरामकृपालु॥२॥ सादरआंनिजानकीहनुमां
नप्रभुपास॥ प्रीतपरसपरसमौसुभसगुनसु
मंगलवास॥३॥ सीतासपपअसंगसुभसातल

रा. अ. भईकृसानु॥नेमप्रेममपतिधर्महितसगुनसुहाव
३९॥ नजान॥२॥सनमानेकपिभालुसबसादरसाजि
विमांन॥सीयसहितसानुजसकलचलेभोनुकु
लभंग॥४॥सिंधुसरोवरसरितगिरिकाननभू
भा मिविहँग॥रामदिखावतजानकिहिहउमगी२॥
अनुराग॥५॥अवधनापगवनेकुसलषेमकु
सलकल्यान॥हरषतसुरबरषतविबुधसगु
नसुमंगलजानि॥६॥तुलसीमंगलसगुनसु

भकहतजोरिजुगहाथ॥हंसवंसअवतंसकु
लजैजैज्ञानकीनाथ॥७॥इतिश्रीरामअ
सरग॥१॥लसर८के॥२॥अवधिअनंदि
तलोगसबज्योमविलोकिविमान॥मनहु
कोकनरकुसलमनमुदितउदयलखभो
नु॥१॥मिलगुरुहिजनपुरजनहिभेटतभर
तसप्रीत॥उवनरौमासियकुसलपुरआ
एरिपुरनजीत॥२॥उदवसिअवधसना

पसब ग्रंबद साडु षदेषि॥ रांमलषन सीता
सकल विकल विषाद विसेषि॥ ३॥ मिलेमा
तुहितमीत गुर सनमांने सबलोग॥ समय
सगुन विसमय हरष प्रियसं॰जोग वियोग
४॥ अमर अनंदत मुदित तहांन मुदित मव
न दश चारि॥ घर २ अव धव धावने मुदित
नगर नारि॥ ५॥ सुदिन सोधि गुर वेद विधि
कीयो रांम अभिषेक॥ सगुन सुमंगल सिधी

दै० कहतजोरजुगहाथ हंसवंसअवतंसजं पजहपजयजानकीनाथ

सवदपकदोहा एक॥ ६॥ भांतिरउपहारलै मिलतजुहारतभूप॥ पहिरायेसनमानीसं वतुलसीसगुनअनुप॥ ७॥ इतिश्रीरामअ ज्ञासर्ग ६॥ सप्तक॥ ३॥ जैधनगांननिसां नपुरवरषतसुरतरुफूल॥ भयेरांमराजाअव धसगुनसमंगलमूल॥ १॥ भांतुविभिषणकौ सपतिपुजैसहितसमाज॥ भलीभांतिसनं मांनिसवविदाकियेरघुराज॥ २॥ रांमरांमसं

रा॰ स्र॰ 78

४२॥

तोषसुषचारचारसकलसुपास॥ नरसुरत
रूसुरधेनुमहिअभिमतभोगविलास॥ ३॥
रामराजसुभकाजसवनिकयेकहिंमैंतैंअंक
सकलसगुनमंगलकुसलहोइवारनहिंवं
क॥ ४॥ कुंभकरनरावनसरिसमेघनादसेवी
र॥ ठहेसमूलविसालतरुकालनदीकैतीर
५॥ सकलसकुलरावनसरिसकवलतका
लकराल॥ सोचपोचअसुगनअसुभजाइ

जीवजंजाल॥५॥अचलराजविभिषनहिदा 79
न्हरांमरघुराज॥अजहुविराजतलंकमहितु
लसीसहीतसमाज॥७॥इतिरां०सरग५स
सक॥७॥ मंजुलमंगलमोदमयमूरतिमारु
तपूत॥सकलसिधिकरतलकरैसुमसुमिं
रतरघुवरदूत॥१॥सगुनसमयसुमिरतसुष
दभरतआचरनचार॥स्वामिधर्मव्रतप्रेम
हितनेमनिवाहनहार॥२॥ललितलषनल

रा॰ प्र॰ धुवंधु पद कमल सुषद सव काहु ॥ सुमिरत
४२॥ सुभ कीरति विजय भूमि ग्राम गृह लाहु ॥३॥ रा
म चंद्र मुष चंद्रमा चित चकोर जव होय ॥ राम
राज सुभ काज सव समो सुहावन सोई ॥४॥
भूमिनंदनी पति पद सुमिरत सुभ सव का
ज ॥ वरषा वर्षत सकल दिसि सरदित सर जा।
सुराज ॥५॥ सेवक सषा सुवंधु हित नाई ल
षन पद माथ ॥ कीजिय प्रीति प्रतीति सुभ स

गुनसुमंगलसाथ॥६॥रांमनांमरतिरांमगति
रांमनामविश्वास॥सुमिरतिसुभमंगलकु
सलतुलसीतुलसीदास॥७॥इतिश्रीरा॰स
र्गः६॥सप्तक॥५॥विप्रयेकबालकमृतक
रांम्योरांमदुआर॥दंपतिबिलपतिसोचवस
आरतकरतपुकार॥१॥रांमसोचसंकोचव
ससविवविकलसंताप॥कालकर्मीचअका
लमईरांमराजकहिपाप॥२॥विवुधविमल

रा॰ अ॰ बानीगगनहेतुमजाउचार॥ रामराजपरिनोम
८२॥ मलकीजीयवेगविचार॥२॥ कौसल्यापालकह
पालचितबालककरीन्हजीआई॥ लखनकुशा
लककल्यानसभरोगीउठेन्हाई॥४॥ बालककजी
यो विलोकसबकहतबडेजनसोय॥ सोचब
विमोचनसगुनसुभरामकृपामलहोय॥५
सिलासतायभयगिरलिरेमहतकजीयेजग
जोन॥ रामप्रनगृहसगुनसुभसकलमसक

न्मांन ॥५॥ दोहा ॥ केवट निसिचर विहग मृग
कीये साधु सनमांन ॥ तुलसी रघुवर की कृपा
सगुन समंगल षांनि ॥७॥ इति श्री मं० सरग
५ ॥ ससकां ॥ ५॥ रोम रोम राजत सकल धर्म व
रति नर नारी ॥ रोग न दोष न दोष दुख सलभ प॑
दारथ चारि ॥१॥ बक उलूक कग गरत न गए अव॑
धजहार घुराउ ॥ नीक सगुन फ गरा निवरी होइ
हो धर्म निपाउ ॥२॥ जती स्वांन संवाद मुनि सगु

84

रा॰ अ॰ नकहतजियजांनि॥ हंसवंसअवतंसपुरविलं

४४॥ गहोतपयपांनि॥ ३॥ रांमकुंचरचाकरहिंसवसी

तहोलाइकलेक॥ सदाअभागीलोगजगकहत

सकाजनिसैक॥ ४॥ सतीसीरोमनिसियतजिरां

मलोगहचिरोम॥ सहहुसहहुसमगुनगनतकि

यविवेगपरिणाम॥ ५॥ वरणधर्मआश्रमधर्म

निरतसुखीसवलोग॥ रांमराजमंगलसगुन

सुफलजायजपजोग॥ ६॥ वाजिमेधअगनत

किएहियेदेनवहुभांति॥ तुलसीराजारांमजग
सगुनसमंगलजांनि॥ ७॥ इतिश्रीराम॰सग॰
५॥ सप्तक॥ ७॥ असमंजसवडसगुनगतिसी
तारांमवियोग॥ गमनविदेसकलेसकलिहां
निपराभवरोग॥ १॥ तियमनिनिसियअपरोधवि
नुप्रभुपरिहरिपछितात॥ सोचसमाजनराज
सुषमनमलिनहुसगात॥ २॥ पुत्रलाभलव
कुसजनमसगुनसुहावनसोइ॥ समाचारमं

86

रा॰ग्र

॥४५॥

गलकुसलसुखदसुहावनकोई॥३॥बाल्मीक
लवकुशासहितश्रानितोयमुनिरांम॥हृदयहरष
जानतप्रथमसगुनसोकपरिणाम॥४॥अनरथग्र
सगुनअसुभअतिसीताअवनिप्रवेश॥समोसो
कसंतापमैकलहकलंककलेश॥५॥रामसभा
लवकुशलालिककियेरामगुनगान॥रामसमा
गमसगुनसुभसुजसंतामसनमान॥६॥सुभ
गसगुनउअचासारसरामचरितमैचारु॥राममन
कहितसफलसवतनसीविमलविचारु॥७

॥ इति श्रीरामअज्ञासर्गसप्तम ॥ ७ ॥ सप्तक ॥

रांमलखनसानुजभरतसुमिरतसुभसवकाज
सहितप्रीतीपरतीतहितसगुनसफलरघुरा ॥
१ ॥ मुदितसुमंगलकुमुदविधुसगुनसरोरुहभां
नु ॥ करहुकाजसववासिविधिशुभआनिहिहृदैहनु
मान ॥ २ ॥ राजकाजमनिहेमहियराममलपरावि
वार ॥ कहतनीकजपत्तोभसुभसमयसगु
नअनुसार ॥ ३ ॥ रांमअनुग्रहसोम्यदिनमसुदी

रां॰ प्र॰ ४५

तप्रजासुराज ॥ रसगोरसधेनी सकलविप्र काज

सुधकाज ४ ॥ मंगल मंगल भाम हित तपहित

जहों संग्राम ॥ सगुन विचारहु समय सुभ क

रिगुरुचरणप्रणाम ५ ॥ विपुलवनजविद्याव

सन बुधविसेषगृहकाज ॥ सगुनसुमंगल

लेतज्योस मिरतसियरघुराज ६ ॥ गुरुप्रसाद

मंगलकुसलरांमरांजसबकाज ॥ जज्ञविवा

हउछाह कतसमतुलसीसबकाज ॥ ७ ॥ इति

श्रीरामअज्ञासर्गसप्त ७॥ सप्तक॥ २॥ शुभ
मंगल काज सब कहत सगुन सब देषि॥ जंत्र
मंत्र मनि औषधि सहस सो सिधि विसेषि॥ १॥ राम
कृपा सब काज थिर सनि वासर विश्राम॥ लोही
महिष गज विनज फल सुष सुपास गह याम
२॥ राहु केतु उलटे चलहि असभ मैं भ अमंगल
मूल॥ हंड मंड पाषंड प्रिय असभ भ्रमर सिसीकु
ल॥ ३॥ समौ राहु बल नगगनगा तिराजहि भजहिं

90

रा० प्र० कलेश॥ सगुन सोच संकट विकट कलह कलुष
४७॥ दुपदेश॥४॥ राहु सोम संगम विषम असगुन अव
धि अगाधि॥ इति भाँति बल दल सबल सीदहिं
मसुर साधु॥५॥ सात पाच गह एक फल चहैं कां
म गति वांम॥ राज विराजी सभोगत सब महित सुमि
रहु राम॥६॥ खेत वानिक विद्या वनिज सेवा शिल
पि सब काज॥ तुलसी सरत न हु सरीस सब स फल
राम के राज॥७॥ इति रामाज्ञा सर्ग ७ सप्तक ७

सुधासधामुरतरुसरिससुफलसुहावनवात
तुलसीसीतापतिभगतिसगुनसुमंगलजात॥१
सिधिसमागमसंपदासदनसमरिसपास॥सीता
रामप्रसादसुभसगुनसुमंगलबास॥२॥कौस
ल्याकल्यानमैसुमरिकरतप्रणाम॥सगुनसुमं
गलकाजसुभक्रपाकरहिसीयराम॥३॥सुमरी
सुमित्रानामजगजेःत्रियलेहिसनेम॥सुवनल
वनरिपुदवनसेपावहिपुनिप्रातिकूल॥४॥दश

92

रा॰ प्र॰
४८॥

रथनामसकामतरुफलुहिसकलकल्यान॥
५॥ कलहकपटकलिकेकैईसुमीरतकाजन॰
साई॥ होनमाचुदारिदकुरितग्रसमगुनग्रसुभत्र
घाई॥ ५॥ रामवामदिसिजानकीलषनदाहनि॰
ओर॥ ध्यानसकलकल्यानमयसुरतरुतुल॰
सीतोर॥ ७॥ इतिश्रीरामग्याप्रस्नायांसप्तम ७॥ सप्त
क॥ ७॥ मध्यमदिनमध्यमदसामध्यमसका॰
जसमाज॥ नाहमापरपुनापपदजानहुमध्य
मकाज॥ १॥ हितपरअनहितहोइजबअनहित

परम्अनुराग॥ रामविमुखविधिवामगतिसगुन
अघाइअभाग॥२॥ कपिनदेईपायनपसौंविन
साधनसिधिहोई॥ सातापतिसुमनसमसुमुरिङी
जोकीजेमलसोई॥३॥ पहलैमलपरिनांमगतिवी
चरमलपोच॥ सगुनकहतअसरांमगतिकहव
समेतसकोच॥४॥ परिमारमासुगौरीपतिसीता
रांमसनेह॥ देपतिहितसंपतिसकलसगुनसुमं
गलदेह॥५॥ प्रीतप्रतीतिनरांमपदवडीआस

९५

मा० ग्र० ४९ ॥

वडलोभ ॥ नहिसपनेहुसंलोवसुघजहांतहांमन
लोभ ॥ ६ ॥ पयनहोइफलबाइजपरोमनाम घ
डमास ॥ सगुनसुमंगलसिधिसवकरतनलतुल
सीदास ॥ ७ ॥ ॥ सगुन समाप्त ॥ ५ ॥ दोहा ॥ वडकले
शकारजगलपवडीग्गासलघुलाहु ॥ उदमान
सीतारवनसमयसारसरघुरावनिरवाहु ॥ ८ ॥ स
दसहुघराविदरितदुसहहरसादिनदोघ ॥ फेर
लोचनतेंमगवसवसघसाजससरोघ ॥ ९ ॥
खेतीवनजनमीघभलनफलउपाइकरंव ॥

कुसमय जानव बाम। विधि रोम नौम मत्रवलं
व॥३॥ पुरबार पखार पसकल परमार पपारना
म॥ सुलभ सिधि सब सगुन सुभ सबमिर तिसीतो
रोम॥४॥ भागभगत तत जिभाग पल ग्रान्सुस
गसेतुपाई॥ ग्रथम गमंगल सगुन सबनिसर।
नरोम ग्राई॥५॥ गईवर धाकिरकविकलसव
तसलि लसनाज॥ कुसमो कुलगुनकलिक
लुकैंपमजहि कलेमकुसाज॥५॥ दिना। स्उदे

गं..स. अनंदप्रतिसगुनसुमंगलदेत ॥ ७ ॥ इति गर्गसत्र

पु.०॥ गर्गप्रसम ॥ ७१ ॥ समाप्त ॥ ६ ॥ उदवसअवध

नरेसविन्दुदमाद्रु यौनरपाल ॥ राजेमंगकुस

माजवडसगुनसुमंगलमाल ॥ १ ॥ अवधप्रवे

सअनंदवडसगुनसुमंगलमाल ॥ रामतिल

कअवसर कहवसबसतोपसकाल ॥ २ ॥ राम

राजवाधकविवुध कहतसगुनसतिभा

उ ॥ देवीदेवलतनुवहियकोजायपउचितउ

पाउ ॥ ३ ॥ मंदमोपरामोहअवसकुटकेकई